बहुत पहले

सैद्धान्तिक सम्प्रत्ययों को विकसित करने का प्रयास किया है जिनके जरिए
इसकी संस्थाओं तथा उनकी गतिविधियों का विवेचन सम्भव हो। कॉम्टे
की विचारधारा में समाज तथा जीवित प्राणी के मध्य समदृश्य के
बहुत सी व्याख्यायें अति प्रचलित रही हैं। बाद में चलकर सामाजिक
की व्याख्या हेतु विकासात्मक सिद्धान्तों का प्रयोग होने लगा। बीसवीं
के समाजशास्त्रियों ने इससे हटकर अपेक्षाकृत अधिक वैज्ञानिक
ात्मक उपागमों पर जोर दिया। प्रसिद्ध समाजशास्त्री टॉलकट
प्रभावों में संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक स्वरूपों को अत्यन्त उपयोगी
य सामाजिक सिद्धान्त के रूप में अपनाया गया। 30/04/21 SC-102, Page-1

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक सिद्धान्त की बुनियादी मान्यता
समाज के अन्तर्गत असम्बन्धित या यादृच्छिक घटनाओं या तथ्यों
िक एवं समाश्वित नियमिततायें पाई जाती हैं। इस परिप्रेक्ष्य में
व्यवस्था माना जाता है जिसकी संरचना परस्पर सम्बन्धित
कर बनती है तथा इसके प्रत्येक तत्त्व सामाजिक संरचना के
इसके स्वरूप को बनाए रखने में सहायक होती है। समाज
जिसके अवयव परस्पर जुड़े होते हैं। फलतः इस व्यवस्था
में हुई तब्दीली दूसरे हिस्से को स्वाभाविक रूप से प्रभावित
कर बाहर से यों ही प्रतीत होने वाली घटनाएं भी
रूप में सम्बन्धित होती हैं जैसा कि मैक्स वेबर ने पाया
पूंजीवाद के विकास में प्रोटेस्टेन्ट आचार संहिता का

प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था को प्रायः चार प्रकार की
सन्तुष्टि या अपनी प्रकार्यात्मक समस्याओं का हल
। वे इस प्रकार हैं:-

संरक्षण:- (Latent Pattern maintenance) यहाँ
तात्पर्य सामाजिक इकाई के उन स्वरूप आपसी [illegible]
[illegible] समायोजिता होता है। ये स्वरूप स्वाभाविक: [illegible]
बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक सामाजिक इकाई